**ओ३म्**

**‘देहरादून के एक एटीएम का दृश्य और सामयिक चर्चायें’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

कुछ देर पहले आज हमें देहरादून की पुरानी सब्जी मण्डी में कुछ सब्जियां, फल व अन्य सामान लेने जाना पड़ा। हम वांछित सामान क्रय करके तिलक रोड से बिन्दाल पुल को जोड़ने वाली सड़क से आ रहे थे। सायं 5.30 बजे का समय था। देहरादून के इस व्यस्ततम स्थान के एसबीआई के एटीएम पर लोगों को पैसे निकालते देखा। अधिकतम 30-35 लोगों की कतार लगी थी। सभी शान्त थे। देहरादून की जनता में हमें कहीं असन्तोष दिखाई नहीं दिया। लगता है कि जीवन सामान्य रूप से चल रहा है। बाजार भी सभी खुले हैं। हमने सब्जी मण्डी में गोल गप्पे वाले से पूछा की आपका कारोबार विगत दस दिनों में कैसा रहा। यह सज्जन वृद्ध हैं और हम विगत 7-8 वर्षों से इन्हें सब्जी मण्डी के आसपास अपनी चल-ठेली पर लोगों को गोलगप्पे व चाट खिलाते हुए देखते हैं। बहुत सज्जन एवं देशभक्त बन्धु है। धार्मिक बातें भी करते हैं। उन्होंने बताया कि उनका व्यवसाय इस बीच सामान्य रूप से चल रहा है। मोदी जी की उनसे प्रशंसा सुनकर भी हमें अच्छा लगा। काले धन के देश व जनता पर अच्छे-बुरे प्रभाव से अनभिज्ञ व्यक्ति भी यदि सरकार के साथ है तो यह देश के आम व्यक्तियों की सकारात्मक सोच को ही प्रस्तुत करता है जिसकी आज सुविधाभोगियों को अधिक आवश्यकता है।

हमें यह भी अनुभव हुआ कि हमारे जो भाई व बहिने देश भर में नोट बन्दी के बाद बैंक व एटीएम से पैसे निकालने में असुविधा अनुभव कर रहे हैं, उनकी असुविधा उचित होते हुए भी हमने टीवी पर उनके विचारों को सुना कि वह सभी न तो दुःखी हैं और न ही सरकार के फैसले से कुपित ही हैं। कुछ अपवादों को छोड़कर अधिकांश व सभी लोग सरकार के निर्णय को सराह रहे हैं। आतंकवाद, अलगाववाद, नक्सलवाद, कश्मीर में सेना पर पत्थरबाजी, हवाला आदि पर अंकुश लगने विषयक सामने आये परिणामों ने सरकार के निर्णय को सही सिद्ध किया है। **हमें यह लगता है कि योग में आठ अंग होते हैं जिसमें एक अंग नियम है। नियम पांच हैं जिनमें से एक ‘‘तप” है। महर्षि दयानन्द ने तप के विषय में लिखा है कि धर्म अर्थात् निजी व सामाजिक कर्तव्यों के पालन में कष्टों के सहन करने को तप कहते हैं। आज योग को विश्व स्तर पर स्वीकृति मिल चुकी है। अतः देश हित में, चाहे अनचाहें, देशवासियों को बैंक व एटीएम से धन प्राप्त करने में तप करना पड़ रहा है। उनका यह तप बेकार नहीं जायेगा अपितु आगामी दिनों में व उनकी आने वाली पीढ़ियों को इससे प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से लाभ ही लाभ होना है। जब हम अपने कष्टों की बात करते हैं तो हमें लगता है कि हमें सेना के बहादुर जांबाज सैनिकों को जो सीमा पर पहरा दे रहे हैं और शत्रु देश के मंसूबों को भूमिसात करते हुए उन्हें धूल चटा रहे हैं, उन पर भी एक बार अवश्य सोचना चाहिये। यदि वह हमारे सुख चैन के लिए कष्ट उठा सकते है, अपनी जान गंवा सकते हैं, अपने बच्चों व परिवारों को अनाथ बना सकते हैं, तो हम एक दो दिन यदि लाइन में खड़े हो गये तो कौन सी बड़ी बात कर दी जबकि वर्तमान व आने वाली पीढ़ियों को इससे लाभ ही लाभ मिलना है।**

हमने ऐसे मित्र भी देखें हैं जो विभिन्न राजनीतिक दलों से सम्बन्धित हैं। हमने उन्हें सकारात्मक बातें कम और नकारात्मक बातें करते अधिक सुना व देखा है। अभी कहीं कोई सरकार विरोधी मिथ्या समाचार आ जाये तो वह उसका प्रचार प्रसार करने में अपना बहुमुल्य समय और मस्तिष्क लगाते हैं। यह वह अपने हित व अहित को देखते हुए ही करते हैं जिसका उन्हें संवैधानिक अधिकार है। ऐसा इसलिये हो रहा है कि देश में विगत लम्बे समय से नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों यथा सत्य, धैर्य, अहिेसा, प्रेम, त्याग, सेवा, दूसरों की सहायता, संवेदना आदि में कमी आई है या यह कहें कि यह मानवीय गुण समाप्त व कुछ कम हो गये हैं। उन नैतिक गुणों के विकास व उन्नति के लिए प्रयास होना चाहिये परन्तु ऐसा कोई प्रयास दिखाई नहीं देता। यदि कोई करेगा तो धर्म के नाम से उसका विरोध किया जाता है और वोट बैंक की राजनीति के कारण राजनैतिक दल आत्म समर्पण कर देते हैं। स्कूलों में नैतिक शिक्षा एवं समाज के प्रतिष्ठित पुरुषों व नेताओं आदि के आचरण से ही देश में यह स्थिति आई है कि **देश के करोड़ों लोगों को दो समय का भोजन भी सुलभ नहीं है। कोई भी राजा व नेता यदि भोजन कर रहा है और उसका देशवासी भूखा व दुःखी है तो यह उस राजा के लिए पाप, अपयश व भावी दुःख का वायस होता है। यह बात धर्म शास्त्रों में तो पढ़ने को मिलती है परन्तु आधुनिकता और पाश्चात्य व विदेशी मूल्यों ने कर्तव्य व मानवीय संवेदनाओं की भावनाओं को समाप्त वा नष्ट कर दिया है। इसी कारण आर्यसमाज के संस्थापक ने वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया था। वेद नैतिक नियमों व आध्यात्मिक मूल्यों के ईश्वर प्रदत्त ज्ञान व शिक्षायें है। उससे दूर जाने से ही मनुष्य व संसार का पतन हुआ है। उस पर लौटे बिना संसार का कल्याण नहीं हो सकता।**

एक वैदिक प्रार्थना है **‘सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्।’** वेदों के प्रचारक संगठन आर्यसमाज में इसे इस रूप में गाया जाता है **‘सबका भला करो भगवान, सब पर दया करो भगवान। सब पर कृपा करो भगवान, सबका सब विद्ध हो कल्याण, सबको दो वेदों का ज्ञान।’** इसी क्रम में यह प्रार्थना भी की जाती है **‘सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय। यह अभिलाषा हम सबकी भगवन् पूरी होय।।‘** इस पर आधारित महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज का एक नियम बनाया है **‘मनुष्य को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं होना चाहिये अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।’** गायत्री मन्त्र में भी ईश्वर से हमें सदमार्ग, परोपकार, सेवा, दान, परदुःखकातर बनने आदि, के लिए बुद्धि को प्रेरणा करने की प्रार्थना की गई है। हमें लगता है कि सारा संसार गायत्री मंत्र की प्रार्थना को सर्वश्रेष्ठ प्रार्थना मानता है परन्तु क्रियात्मक व आचरण की दृष्टि से उससे बहुत दूर है। देश व विश्व में एक श्लोक प्रचलित एवं सर्वमान्य है जिसके शब्द हैं **‘अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुम्।’ इसका अर्थ है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने शुभ व अशुभ कर्मों का फल अवश्य ही, हर हालत में, इस जन्म में नहीं तो परजन्म व भावी अनेक जन्मों में भोगना ही होगा। यह भी बता दें कि शास्त्रानुसार शुभ कर्मों का फल सुख व अशुभ कर्मों का फल दुःख होता है। आज हम पशु योनि में जो कुत्ता, बिल्ली, गाय, घोड़ा, भेड़, बकरी, मुर्गी, सूअर व सर्प आदि देख रहे हैं। यह अपने पूर्व मनुष्य जन्मों का फल ही भोग रहे हैं ऐसा ईश्वरीय ज्ञान वेद और वेद-ऋषियों का विचार व सिद्धान्त है।**

आज टीवी पर यह भी बताया जा रहा है कि योग गुरु स्वामी रामदेव ने अपने नवीनतम ट्वीट में कहा है कि प्रधानमंत्री जी को आतंकवादियों एवं पालिटिकल माफियों से जान का खतरा है। यह चिन्ताजनक समाचार है। इसमें कहीं न कहीं कुछ तथ्य अवश्य हो सकता है। हम भी यदा कदा ऐसे नकारात्मक विचारों से घिर जाते हैं जिसका कारण आतंकवाद व माफियाओं की सोच व उनके द्वारा की जाने वाली हिंसक घटनायें हैं। हम ईश्वर से मोदी जी के जीवन की रक्षा, स्वास्थ्य और दीर्घायु की प्रार्थना करते हैं। इस विषय में और बहुत कुछ कहा जा सकता है परन्तु हम उसे सुधी व विवेकशील पाठकों कि हनण् छोड़ते हैं। हमारी यह भी इच्छा और प्रार्थना है कि कालेधन पर रोक के मोदी जी के प्रयासों को ईश्वर सफल करें जिससे इस देश के गरीबों व उनके बच्चों का भाग्य संवर सके। उर्दू में प्रचलित एक पंक्ति को लिख कर लेख को विराम देते हैं **‘तू खाक उसे करना चाहे जो तेरा बेड़ा पार करे। ’ ओ३म् शम्।**

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘ऋषि दयानन्द के दो मुख्य मन्तव्य और उनके अनुसार मनुष्य का कर्तव्य’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

ऋषि दयानन्द ने अपने विश्व विख्यात ग्रन्थ **‘सत्यार्थप्रकाश’** के अन्त में **‘स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश’** के अन्तर्गत अपने निजी मन्तव्यों का प्रकाश किया है। अपना निजी मन्तव्य बताते हुए वह लिखते हैं कि **‘मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अप्रिप्राय नहीं है, किन्तु जो सत्य है, उसको मानना, मनवाना, और जो असत्य है, उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त में प्रचलित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो जो धर्मयुक्त बातें हैं उनका त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूं, क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहिः है।’** हम समझते हैं कि ऋषि ने अपना जो मन्तव्य प्रकाशित किया है उसका उन्होंने अपने जीवन में हर क्षण, हर पल व हर स्थान पर पूर्णतया पालन किया है। यह भी विशेष है कि संसार के शायद किसी विद्वान व मत प्रवर्तक ने ऐसी कभी कहीं कोई घोषणा, लिखकर व बोलकर, की हो या इस सर्वमान्य मन्तव्य का पालन किया हो। अतः ऋषि दयानन्द हमें सभी मत प्रर्वतकों में प्रमुख व संसार के शीर्षस्थ एकमात्र महापुरुष प्रतीत होते हैं।

मनुष्य का कर्तव्य वा गुण-कर्म-स्वभाव कैसे हों, इसका प्रकाश करते हुए वह कहते हैं कि **‘मनुष्य उसी को कहना कि जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामथ्र्य से धर्मात्माओं की, कि चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान् भी हो तथपि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी चले ही जावें, पन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक कभी न होवें।’** हमारी दृष्टि में यदि आप सभी धर्म ग्रन्थों का अध्ययन कर लें, तो भी इससे अधिक अच्छी, महत्वपूर्ण, आदर्श, सर्वांगीण व सर्वमान्य मनुष्य की परिभाषा वा मनुष्य के कर्तव्य, गुण, कर्म व स्वभाव आदि कहीं नहीं पायेंगे। हमें तो लगता है कि आज की परिस्थितियों में इन शब्दों को भारत की संसद के अन्दर व बाहर मोटे-मोटे स्वर्णिम अक्षरों में लिखकर प्रदर्शित किया जाना चाहिये। देश के सभी नागरिकों सहित सभी नेताओं से इसकी शपथ लेने को भी कहना चाहिये।

उपर्युक्त दोनों विशेष विचारों, कथनों व वचनों के लिए महर्षि दयानन्द जी का धन्यवाद करने सहित उनकी जय जयकार कर हम इस संक्षिप्त लेख को विराम देते हैं।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

ओ३म्

**‘अमर शहीद लाला लाजपत राय जी के बलिदान दिवस पर उन्हें श्रद्धांजलिं’**

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

आज 17 नवम्बर को अमरशहीद लाला लाजपत राय जी की 88 वां बलिदान दिवस वा पुण्यतिथि तिथि है। लाला लाजपत राय जी ने अपने 63 वर्ष के जीवन में देश, धर्म और समाज हित के जो कार्य किये, उसके कारण वह अमर हैं। वह महर्षि दयानन्द के योग्यतम शिष्यों में से एक थे। शहीद भगतसिंह और उनके सभी क्रान्तिकारी मित्र लाला जी के शिष्य थे। लाला जी की अंग्रेजों द्वारा अकारण व अनावश्यक लाठियों से जानलेवा पिटाई ने ही भगत सिंह जी व उनके साथियों को उनके हत्यारों में से एक साण्डर्स से देश के अपमान का बदला लेने के लिए प्रेरित किया था जिसका भारत की आजादी के आन्दोलन में महत्वपूर्ण स्थान है।

देश के सबल प्रहरी लाला लाजपतराय जी का जन्म 18 जनवरी सन् 1865 को पंजाब के मोगा जिले के ढूडूकी गांव में एक वैश्य परिवार में हुआ था। उनके बचपन की घटना है कि उनके पिता इ्रस्लाम से प्रभावित थे। अभी लाला जी गोद में ही थे, कि पिता व माता लाला जी को लेकर मस्जिद में धर्मान्तरण हेतु जा रहे थे। रास्ते में लाला जी इतना रोये कि आपके पिता को अपना इरादा व मकसद बदलना पड़ा और वह घर वापिस आ गये। इसके बाद उनके पिता ने जब भी इस विषय में सोचा, कोई न कोई बाधा आती रही। युवावस्था आने पर आप लाहौर में पढ़ते थे। आर्यसमाज के दो प्रमुख स्तम्भ पं. गुरुदत्त विद्यार्थी और महात्मा हंसराज जी आपके सहपाठी मित्रों में थे। उन दिनों लाहौर में आर्यसमाज के प्रधान लाला साईंदास ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। आपकी दृष्टि इन युवकों पर पड़ी तो आपने इन्हें आर्यसमाज में आमंत्रित कर उन्हें वैचारिक आधार पर प्रभावित ही नहीं किया अपितु इनकी किसी भी प्रकार की समस्या व कठिनाई को हल करने का आश्वासन भी दिया। इसका प्रभाव यह हुआ कि आप तीनों मित्र आर्य समाज के सदस्य बन गये और आपने आर्य समाज को देश देशान्तर में लोकप्रिय बनाने के अनेक कार्य किये। यह भी बता दें कि आपको देश की आजादी के लिए कार्य करने की प्रेरणा महर्षि दयानन्द के उपदेशों व उनके प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश और आर्याभिविनय आदि से मिली थी। अमर शहीद भगत सिंह जी स्वयं आर्यसमाजी परिवार के सदस्य थे। आपके दादा सरदार अर्जुन सिंह कट्टर महर्षि दयानन्द के भक्त थे और प्रतिदिन यज्ञ और सन्ध्या करते थे। सरदार अर्जुन सिंह जी यदि रेलयात्रा करते तो यज्ञकुण्ड, समिधायें और हवन सामग्री उनके साथ रहती थी। उन्होंने अपने पोते भगत सिंह का यज्ञोपववीत संस्कार भी आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान और पुरोहित पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति जी से कराया था। इन लोकनाथ तर्कवाचस्पति ही के पोते राकेश शर्मा हैं जो अमेरिका के चन्द्रयान में चन्द्रमा पर गये थे और अपने यान से चन्द्रमा की परिक्रमा की थी। पूरे विश्व में गाई जाने वाली यज्ञ प्रार्थना ‘यज्ञ रूप प्रभु हमारे भाव उज्जवल कीजिए छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिए’ आपके द्वारा ही लिखी गई है जो देश देशान्तर में सभी आर्यपरिवारों में प्रतिदिन गाई जाती है।

लाला लाजपत राय जी का देश की आजादी के आन्दोलन में प्रमुख योगदान था। वह देश की आजादी के आन्दोलन के प्रमुख लोकप्रिय और आदर्श नेता थे। लाला लाजपत राय और शहीद भगतसिंह के चाचा सरदार अजीत सिंह ऐसे दो आर्यसमाजी व ऋषि दयानन्द जी के भक्त हुए हैं जिन्हें देश की आजादी का नेतृत्व व कार्य करने के कारण देश निकाला या जला वतन किया गया था। इनके अतिरिक्त अन्य किसी कांगे्रसी नेता को जलावतन नहीं किया गया। यह आर्यसमाज की बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसका कारण आर्यसमाज की शिक्षायें और उनका उन पर आचरण करना था। लाला जी पंजाब केसरी के नाम से देश व विश्व में विख्यात हुए। देश के तीन बड़े नेता लाला-बाल-पाल में से आप एक थे। आप हिन्दी, अंग्रेजी व उर्दू के कुशल लेखक, प्रभावशाली वक्ता, सदाचारी नेता होने के साथ देश के जन जन में लोकप्रिय थे। आपने लाहौर में साइमन कमीशन के विरोध में आन्दोलन करते हुए देशभक्तों के एक विशाल जलूस का नेतृत्व किया था। इस कारण लाला जी के भय से आक्रान्त अंग्रेज पुलिस अधिकारी ने उन पर भीषण लाठी चार्ज किया। इस भीषण लाठी चार्ज का ही परिणाम था कि कुछ दिनों बाद लाला जी की मृत्यु हो गई। लाला जी ने कहा था अंग्रेजों द्वारा मुझ पर बरसाईं र्गइं लाठियां अंग्रेजों भारत में राज्य के कफन की कील साबित होंगी और हुआ भी यही। इस घटना के लगभग 19 वर्ष बाद अंग्रेजों को देश छोड़कर जाना पड़ा। आजादी का श्रेय कोई भी ले या किसी को भी दिया जाये परन्तु यह सत्य है कि देश की आजादी में भारत माता के कोटिशः सपूतों का योगदान था जिसमें लाला लाजपतराय व भगतसिंह जी सहित सभी क्रान्तिकारियों की अग्रणीय भूमिका थी। हम लाला जी की निर्भीकता व देशभक्ति को नमन करते हैं।

भारत का पंजाब नैशनल बैंक और लक्ष्मी इंश्योरेंस कम्पनी के संस्थापक भी लाला लाजपत राय जी ही हैं। आपने अपनी माता जी की स्मृति में एक अस्पताल भी स्थापित किया था जो विभाजन होने के कारण पाकिस्तान में चला गया। लाला जी में क्रान्ति के विचार उत्पन्न करने का श्रेय लाला साईंदास, ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश और आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों को मुख्य है। वह आर्यसमाज को अपनी माता और ऋषि दयानन्द जी को अपना पिता मानते थे। वह देश की आजादी के दीवाने थे। कल्याण व सत्य मार्ग के पथिक थे। वह ईश्वर को सच्चिदानन्द, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायकारी और जन्म-मृत्यु प्रदाता सहित कर्म-फलों का दाता मानते थे। सन्ध्या व यज्ञ के वह प्रेमी थे। आपने अपने जीवन में प्रभूत सहित्य सृजित किया जिसका हिन्दी अनुवाद आर्य विद्वान डा. भवानीलाल भारतीय ने किया और उनके सभी ग्रन्थों का प्रकाशन आर्य साहित्य के प्रमुख प्रकाशक यशस्वी श्री अजय आर्य जी के साहित्य प्रतिष्ठान ‘विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली’ ने ग्रन्थावली रूप में किया।

लाला जी अपने जीवन में एक वा अधिक बार देहरादून में भी आये थे। एक बार प्रमुख आर्य विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने एक आर्य दलित नेता का नाम हमें बताया था जिनके देहरादून के घर में लाला जी गये थे और भोजन आदि से सत्कार प्राप्त किया था। यह बन्धु हमारे मोहल्ले ‘चुक्खूवाला’ में ही रहते थे। हम उनके घर पर भी गये हैं। उनके पुत्र इनकम टैक्स में उच्च पदाधिकारी थे। उनके यहां लाला जी का परिवार के सदस्यों के साथ चित्र भी लगा था। इस समय हम उनका नाम भूल रहे हैं। शायद चैधरी बिहारी लाल रहा हो।

17 नवम्बर सन् 1928 को लाला जी बलिदान हुआ था। लेख को अधिक विस्तार न देते हुए हम इसे विराम देते हैं और लाला जी को उनकी देश की सेवाओं के लिए श्रद्धांजलि देते हैं। इति ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

ओ३म्

**‘वर्ण पर आधारित जन्मना जाति व्यवस्था या मरण व्यवस्था’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

महाभारत काल तक वेदों का प्रचार प्रसार रहा और देश व भूमण्डल पर यत्र-तत्र ऋषियों के होने की सम्भावना भी प्रतीत होती है। महाभारत काल के बाद वैदिक धर्म व संस्कृति का सूर्य का प्रकाश कुछ कम हो गया जिसके परिणामस्वरुप, एक ओर जहां देश में अविद्या व अन्धविश्वासों का प्रसार हुआ वहीं, गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था ने भी जन्मना जाति व्यवस्था का रुप ले लिया। यह जन्मना जाति व्यवस्था भी चार वर्णों पर ही आधारित थी। ब्राह्मण वर्ण में ही अनेकानेक जन्मना जातियों का निर्माण कब व कैसे हो गया, कोई नहीं जानता परन्तु यह सब मानेंगे कि जन्मना जातियों का प्रचलन महाभारत काल के बाद विगत पांच हजार वर्षों में ही हुआ है। ब्राह्मणों की ही तरह क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र वर्ण के बन्धुओं में भी नाना जन्म पर आधारित जातियों का प्रचलन हुआ। जन्मना जातियों के प्रचलन के साथ इनमें परस्पर छुआछूत का प्रारम्भ कब व किसने किया इसके भी ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यह भी माना जाता है कि आठवी शताब्दी में यवनों के भारत पर आक्रमण और उनके शनैः शनैः राज्य विस्तार, हिन्दुओं का धर्मान्तरण और न करने वालों को मनुष्यों का मल मूत्र साफ करने के लिए बाध्य करना, जैसे गुलामी के समय में यह छुआ-छूत व अस्पर्शयता आरम्भ हुई थी। यह बात अनेक घटनाओं के आधार पर उचित लगती है।

समय के साथ समाज में जाति के आधार पर लोगों को व्यवसाय और अधिकार प्राप्त होने लगे। शूद्र वर्ण के भाईयों को पढ़ने-पढ़ाने से लेकर अच्छे काम करने के शायद सभी अधिकारों से वंचित कर दिया गया। इससे उनका जीवन भी अनेकानेक कठिनाईयों और दुःखों से भर गया। ऐसे समय में उन्हें यदि सबसे अधिक राहत मिली तो वह ऋषि दयानन्द सरस्वती (1825-1883) की विचारधारा व उनके द्वारा सन् 1875 में स्थापित संगठन आर्यसमाज और उनके अनुयायियों से प्राप्त हुई। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज ने सभी दलित भाईयों को गुरुकुलों में अन्य वर्ण के विद्यार्थियों के साथ निःशुल्क अध्ययन कराने के साथ वेदाध्ययन करने का भी अधिकार दिया जिससे अनेक दलित भाई वेदों के विद्वान बने और आर्यसमाज में पुरोहित व उपदेशक बन गये। इसी प्रकार आर्यसमाज ने अस्पर्शयता और छुआछूत पर भी कठोर प्रहार किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि इस अमानवीय व्यवस्था में भारी सुधार हुआ। आर्यसमाज ने गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार विवाह भी प्रचलित किये जो दिन प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं जिसके अनुसार अनेक दलित भाई व बहिन प्रेम विवाह व दोनों पक्षों के परिवारों द्वारा व्यवस्थित विवाह करने लगे हैं।

महर्षि दयानन्द ने गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्था का यथार्थस्वरुप सत्यार्थप्रकाश सहित अपने अन्य ग्रन्थों में भी प्रस्तुत किया है। जन्मना जाति व्यवस्था और परस्पर छुआछूत के विचारों से वह अत्यन्त क्षुब्ध व दुःखी थे। उनका यह क्षोभ उनकी इन पंक्तियों में व्यक्त हुआ जिसमें उन्होंने कहा व लिखा ‘‘यह वर्ण व्यवस्था तो आर्यों के लिए मरण व्यवस्था बन गई है। देखें इस डाकिन से इनका पीछा कब छूटता है।” हमने सम्प्रति यह उद्धरण यहां ‘वर्णव्यवस्था बनाम् जाति-व्यवस्था (सत्यान्वेषण स्मारिका-2002)’ में प्रकाशित प्रसिद्ध आर्यविद्वान श्री यशपाल आर्यबन्धु, मुरादाबाद के लेख से दियस है। हमने श्री यशपाल आर्यबन्धु जी के अनेक प्रवचन व उपदेशों को सुना है। उनसे चर्चायें भी की हैं। मृत्यु से कुछ समय पूर्व हमने उनसे दूरभाष पर भी बातें की थी। वह बहुत अच्छे उपदेशक एवं लेखक थे। आपने अनेक लोकप्रिय लघु ग्रन्थों की रचना की है। महर्षि के उपर्युक्त वचनों को उन्होंने ‘अन्तर्राष्टीय आर्यसमाज स्मारिका, पृष्ठ 64’ से उद्धृत किया है।

भारत में विश्व की लगभग 18 प्रतिशत जनसंख्या रहती है। इसमें भी अब अनेक जैन, बौद्ध, सिख, मुस्लिम व ईसाई आदि हैं जो जन्मना जाति व्यवस्था को नहीं मानते। विश्व के शेष 5 अरब 75 करोड़ लोग जो ईसाई, मुसलमान व नास्तिक हैं, जन्मना जाति व्यवस्था को नहीं मानते। ऐसी स्थिति में यह आश्चर्य में डालने वाला तथ्य है कि ईश्वरीय ज्ञान वेदों पर आधारित आर्यों व हिन्दुओं के मत व धर्म में यह अमानवीय प्रथा कैसे उत्पन्न हो गई और आज भी विद्यमान है। इससे देश व समाज को भारी हानि भी हो रही है। अतः इसको तुरन्त समाप्त किया जाना आवश्यक है अन्यथा इससे भविष्य में अनेक भीषण दुष्परिणाम, गुलामी आदि, हिन्दू व आर्यों के सम्मुख आ सकते हैं जिससे हमारा समाज व इसके नेता पूरी तरह से बेखबर दिखाई देते हैं।

महर्षि दयानन्द के वाक्य में इस व्यवस्था को लेकर गहरी पीड़ा का साक्षात्कार होता है। हम हिन्दू व आर्यसमाज के विद्वानों व नेताओं से अनुरोध करते हैं कि वह इस समस्या पर गम्भीरता से विचार कर और इसके भावी भीषण दुष्परिणामों को देखते हुए इसे समाप्त करने के कारगर उपाय करें व सामाजिक आन्दोलन चलायें। हम अपने पाठकों से यह भी निवेदन करते हैं कि महर्षि के उक्त वचन ‘वर्ण व्यवस्था मरण व्यवस्था बन गई है’ का पता कि यह उनके किस ग्रन्थ व उपदेश आदि में आया है, अवगत कराने का कष्ट करें। हमने कभी इसे पढ़ा था और इसकी स्मृति हमारे मस्तिष्क में है परन्तु हम इसका सन्दर्भ भूल चुके हैं। हम अपने सुधी पाठकों से अपेक्षा करते हैं कि वह इसका सन्दर्भ अवश्य जानते होंगे। कृपया ऋषि के उक्त वाक्य का सन्दर्भ सूचित कर हमारी सहायता करें। हम आभारी होंगे। इसी के साथ इस संक्षिप्त लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**